अरिहंतों को नमस्कार, सिद्धों को नमस्कार, आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार, संसार के सब साधुओं को नमस्कार।

पवित्र आत्माओं को शुद्ध मन से किया गया यह नमस्कार सब पापों का नाश करने वाला है। यह संसार में सबसे उत्तम मंगल है।

विश्व में लाखों व्यक्ति (जैन) इस महामंत्र का जप करते हैं। इसके पाँचों पदों के पैंतीस अक्षर हैं। इन अक्षरों में अद्भुत मंत्र शक्ति छुपी है। शुद्ध भावों के साथ तन्मय होकर इनका जप (उच्चारण) करने से ध्वनि तरंगों के प्रकम्पन से अन्तःकरण में ऊर्जा का विस्फोट होता है। जिसके प्रभाव से हमारी आध्यात्मिक शक्तियाँ जाग जाती हैं और शरीर के भिन्न-भिन्न चेतना केन्द्र शक्तिशाली एवं ज्योतिर्मय होकर रोग, शोक, भय, चिन्ता आदि को नष्ट कर देते हैं। यह मंत्र अशुभ ग्रहों की पीड़ा, भूत-प्रेत, हिंसक जीवों का उपद्रव, रोग तथा दुष्ट-घात आदि से रक्षा कवच की भाँति सदा रक्षा करता है। आरोग्य, सौभाग्य आदि अनेक प्रकार के भौतिक एवं आध्यात्मिक लाभ देने वाला यह महामन्त्र अक्षय शक्ति का स्रोत माना गया है।

स्वर्ण पुरुष

रत्नपुर नगर में यशोभद्र और शिवा नामक एक समृद्ध दम्पति रहते थे।

यों तो सेठ यशोभद्र को कोई कमी नहीं थी, परन्तु पुत्र का अभाव श्रेष्ठी दम्पति के मन में काँटे-सा चुभता रहता। स्त्री होने के कारण सेठानी का दुःख और भी गहरा था। एक दिन शिवा ने यशोभद्र से कहा—

स्वामी! पुत्र के बिना हमारा धन-वैभव सब व्यर्थ है। हमारी गाढ़ी कमाई को कौन भोगेगा और कौन हमारे वंश का नाम चलायेगा?

प्रिये! मैं तुम्हारा दुःख जानता हूँ, धैर्य रखो। नवकार मन्त्र का श्रद्धा और निष्ठापूर्वक जाप करो जिससे हमारे अशुभ कर्मों का नाश होगा। मनोकामना पूर्ण होगी।

सेठानी शिवा को भी नवकार मन्त्र पर अगाध श्रद्धा थी। विधिपूर्वक नवकार मन्त्र का प्रतिदिन पाठ करने लगी।

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

नवकार मन्त्र के प्रभाव से पुण्य कर्मों का उदय हुआ और सेठानी शिवा ने एक पुत्र को जन्म दिया।

कितना सुन्दर बालक है ?

उन्होंने बड़े धूमधाम से पुत्र का जन्मोत्सव मनाया। सैकड़ों गरीबों को भोजन कराया। दान किया।

शिवादेवी का पुत्र होने के कारण इस बालक को हम शिवकुमार के नाम से पुकारेंगे।

शिवकुमार का लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से होने लगा।

ले बेटा ! ये खीर खा ले।

नहीं माँ ! मैं खीर नहीं खाऊँगा। मुझे तो सैंवई चाहिये।

बेहद लाड़-प्यार के कारण शिवकुमार बिगड़ने लगा और बुरी संगत में पड़ गया।

बेटा शिव ! संध्या हो गई है, घर के भीतर आ जाओ।

नहीं माँ ! मैं अभी और खेलूँगा।